महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का

प्रमाणित कैलेण्डर

कलियुगाब्द ५१२५-२६

YEAR
2024

विक्रम संवत्
२०८०-८१

कैलेण्डर के बारे में

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का निर्माण सन् 1719 में जयपुर के महाराजा सवाई राजा जयसिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया था। जीवाजी वेधशाला, उज्जैन द्वारा सन् 1942 से प्रतिवर्ष दृश्य ग्रह स्थिति पञ्चाङ्ग एवं 2021 से आकाश अवलोकन मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जन-सामान्य की सुविधा को देखते हुए वर्ष 2021 से कैलेण्डर का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया है। इस कैलेण्डर के प्रकाशन का उद्देश्य नागरिकों को हिन्दी तिथियों के प्रारम्भ एवं समाप्ति का समय, म.प्र. शासन के अवकाश तथा माह की खगोलीय घटनाओं की प्रमाणित जानकारी प्रदान करना है।

विशेषताएँ

जीवाजी वेधशाला कैलेण्डर में विक्रम संवत् के अनुसार माह, हिन्दी तिथियाँ, म.प्र. शासन द्वारा घोषित शासकीय अवकाश एवं माह की प्रमुख खगोलीय घटनाओं को स्थान दिया गया है। विशेष बात यह है कि प्रत्येक दिनांक पर हिन्दी तिथि का समाप्ति समय 24 घण्टे फॉर्मेट (रेलवे समय के अनुसार) में दिया गया है। तिथि समाप्ति के उपरांत अगली तिथि प्रारम्भ होती है।

जैसे- 1 जनवरी 2024 को पौष कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि 14:28:08 बजे पर समाप्त होकर षष्ठी तिथि प्रारम्भ हो रही है। जो दिनांक 2 जनवरी 2024 को 17:11.02 बजे (सायं 05:11.02 बजे) पर समाप्त हो रही है। इसके तुरन्त बाद कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि प्रारम्भ होती है। इसी प्रकार 16 जनवरी 2024 को शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि प्रातः 02:17.01 बजे पर समाप्त हो रही है तथा षष्ठी तिथि प्रारम्भ हो रही है परन्तु षष्ठी तिथि 16 जनवरी 2024 को ही 23:58:04 बजे (रात्रि 11:58:04 बजे) समाप्त हो रही है।

इस वर्ष की थीम नक्षत्र को रखा गया है। नक्षत्र मंडल में इनकी कुल संख्या 27 है। आकाश में एक नक्षत्र 13 अंश 20 कला (13° 20') का माना गया है। एक नक्षत्र में 3 अंश 20 कला के चार चरण होते हैं। एक राशि के 30 अंश, सवा दो नक्षत्रों या नौ चरणों से मिलकर बनती है।

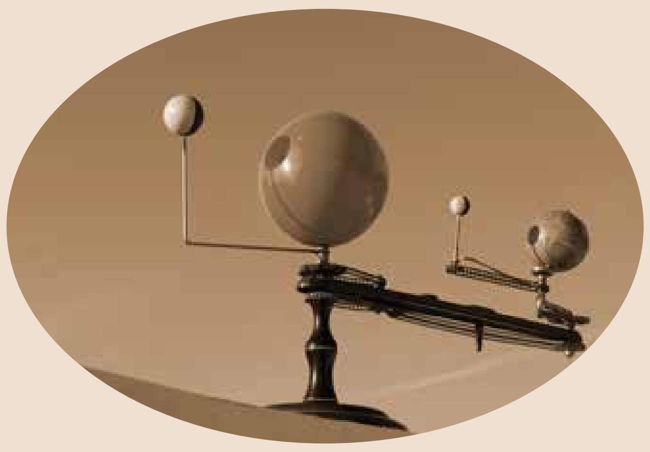

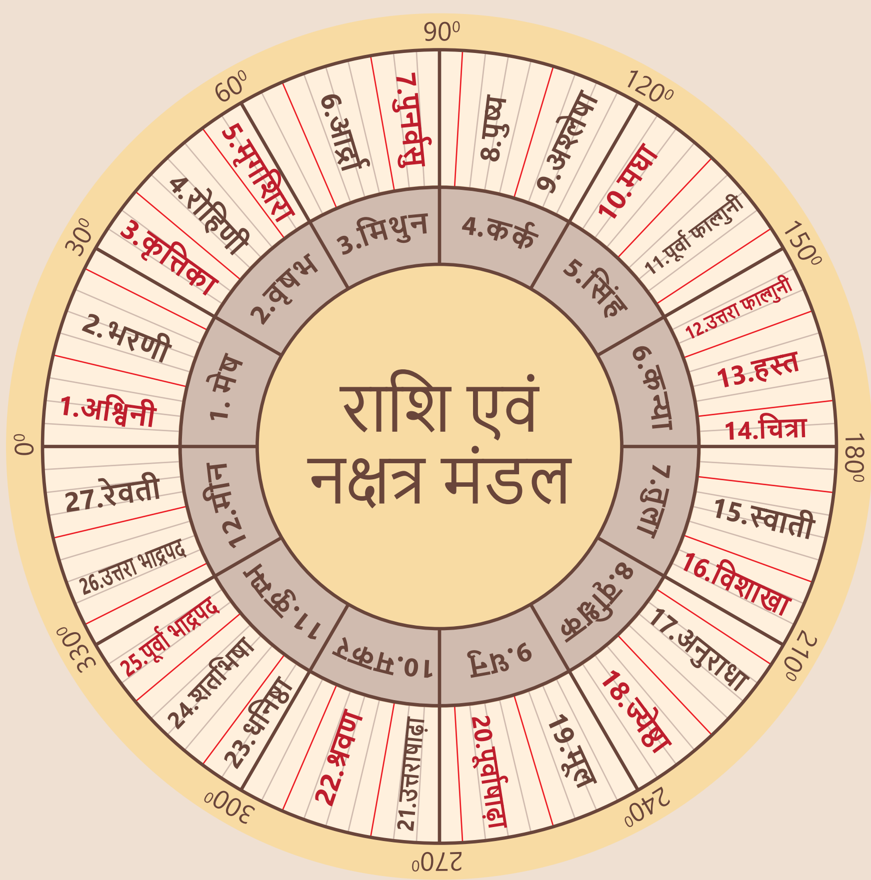

जीवाजी वेधशाला प्रकाशन
कैलेण्डर-2024 | मूल्य ₹ 101/- मात्र

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, भोपाल

YEAR
2024

विक्रम संवत्
२०८०-८१

- कलियुगाब्द ५१२५-२६ -

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

भारतीय प्राचीन खगोल विज्ञान
एक परिचय

भारतीय ज्योतिष-खगोल का प्राचीनतम् इतिहास सुदूर भूतकाल के गर्भ में छिपा हुआ है। भारतीय खगोल विज्ञान का प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक का लंबा इतिहास है। भारतीय खगोल विज्ञान की शुरुआती जड़ें सिंधु घाटी सभ्यता की अवधि या उससे पहले की हो सकती हैं। खगोल विज्ञान बाद में वेदांग या वेदों के अध्ययन से जुड़े सहायक विषयों में से एक के रूप में विकसित हुआ, जो 1500 ईसा पूर्व या उससे अधिक पुराना है।

खगोल विज्ञान को वेद का नेत्र कहा गया है,
''वेदस्य निर्मलम् चक्षुर्ज्योर्ति:शास्त्रमकल्मषम्।''

क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टियों में होने वाले व्यवहार का निर्धारण काल से होता है और काल का ज्ञान ग्रहीय गति से होता है। अत: प्राचीन काल से खगोल विज्ञान वेदांग का हिस्सा रहा है। ऋग्वेद, शत्पथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता आदि ग्रंथों में नक्षत्र, चान्द्रमास, सौरमास, मल-मास, ऋतु परिवर्तन, उत्तरायन, दक्षिणायन, आकाशचक्र, सूर्य की महिमा, कल्प का माप आदि के संदर्भ में अनेक उद्धरण मिलते हैं। इस हेतु ऋषि प्रत्यक्ष अवलोकन करते थे। यजुर्वेद के 18वें अध्याय के चालीसवें मंत्र में यह बताया गया है कि सूर्य किरणों के कारण चन्द्रमा प्रकाशमान है।

प्राचीन भारतीय अपने यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठान ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभ लग्न देखकर किया करते थे। शुभ लग्न जानने के लिए उन्होंने खगोल विज्ञान का विकास किया था। वैदिक आर्य सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायन गति से परिचित थे। वैदिककालीन खगोल विज्ञान का एक मात्र ग्रंथ 'वेदांग ज्योतिष' है। इसकी रचना 'लगध' ऋषि ने ईसा से लगभग 1200 वर्ष पूर्व की थी। महाभारत में भी खगोल विज्ञान से संबंधित जानकारी मिलती है। महाभारत में चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण की चर्चा है। इस काल के लोगों को ज्ञात था कि ग्रहण केवल अमावस्या और पूर्णिमा को ही लग सकते हैं। इस काल के लोगों का ग्रहों के विषय में भी अच्छा ज्ञान था।

प्राचीन भारत में यंत्रों का उपयोग कर खगोल का निरीक्षण करने की पद्धति रही है। आर्यभट्ट के समय आज से 1500 से अधिक वर्ष पूर्व पाटलीपुत्र में वेधशाला (Observatory) थी, जिसका प्रयोग कर आर्यभट्ट ने कई निष्कर्ष निकाले। इसी तरह वराहमिहिर, भास्कराचार्य जैसे प्राचीन वैज्ञानिकों ने खगोल सम्बंधित अभूतपूर्व खोजें कीं। आज यही प्राचीन खोजें पश्चिमी देशों द्वारा किये जा रहे खगोलीय अन्वेषण का आधार हैं।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2080

वृषभ राशि में कृत्तिका नक्षत्र के तीन चरण, रोहिणी नक्षत्र पूर्ण तथा मृगशीर्ष नक्षत्र के दो चरणों का समावेश होता है। बैल या सांड के आकार के इस तारामंडल में रोहिणी का लाल तारा इस सांड के मस्तक पर, कृत्तिका गर्दन पर है।

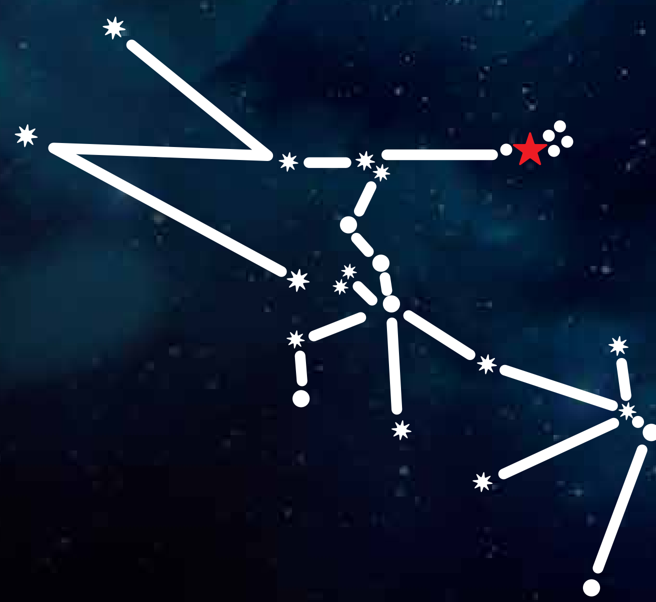

3 | कृत्तिका

27 नक्षत्रों में से तीसरे स्थान पर आने वाला नक्षत्र, कृत्तिका नक्षत्र है। वैदिक काल में नक्षत्रारंभ कृत्तिका में माना गया था। क्योंकि उस समय बसंत विषुव-बिंदु कृत्तिका में था। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि कृत्तिकाएं पूर्व दिशा से नहीं हटतीं। अयन चलन के कारण विषुव या संपात बिन्दु पश्चिम की ओर सरकता रहता है। जिससे अब कृत्तिका-पुन्ज ठीक पूर्व दिशा में उदित नहीं होता। वैदिक काल में कृत्तिका-पुन्ज के सात तारे पहचाने गए थे। पौराणिक काल में सात कृत्तिकाओं को सात ऋषि पत्नियों के नाम दिए गए - संभूति, अनुसुया, क्षमा, प्रीति, संनति, अरुंधति और लज्जा। बाद के काल में कृतिकाओं की संख्या 6 रह गई और इसका संबंध युद्ध के देवता कार्तिकेय के साथ जोड़ा गया। छह तारों के इस संयुक्त का रंग सफेद है और इसके स्वामी सूर्य हैं। आकाश में खुरपा या उस्तुरा जैसे प्रतीत होने वाले कृत्तिका नक्षत्र का अर्थ होता है 'कार्य करना' और इसकी वनस्पति गूलर है। कृत्तिका-पुंज हमसे करीब 400 प्रकाश वर्ष दूर है। चांद्र नक्षत्र कृत्तिका के आधार पर ही कार्तिक महीना बना। कृत्तिका नक्षत्र पुन्ज का नजारा स्पष्ट और आकर्षक है।

4 | रोहिणी

नक्षत्रों के क्रम में चौथे स्थान पर आने वाले रोहिणी नक्षत्र की आकृति गाड़ी जैसी प्रतीत होती है। 5 तारों के इस नक्षत्र को वृषभ राशि का मस्तक कहा जाता है जिसकी वनस्पति जामुन का पेड़ है। अंग्रेज़ी में अल्डेबरान स्टार कहा जाने वाला यह नक्षत्र कृत्तिका नक्षत्र के पूर्व में दक्षिण भाग में दिखता है। लाल रंग का रोहिणी तारा व्यास में हमारे सूर्य से करीब 30 गुना बड़ा और हमसे 70 प्रकाश वर्ष दूर है। पुराणों के अनुसार रोहिणी, चंद्र की पत्नी थीं जिसके कारण रोहिणी नक्षत्र में सूर्य का प्रभाव अधिक दिखता है और जिस समय सूर्य रोहिणी में होते हैं उस समय चंद्र नौ नक्षत्रों का भ्रमण करते हैं जिसे नौतपा कहा जाता है। नक्षत्र के स्वामी चंद्रमा और राशि स्वामी शुक्र हैं।

Kaliyugabd - 5125 | कलियुगाब्द - ५१२५

Pausha-Magh | January

जनवरी 2024

पौष-माघ

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
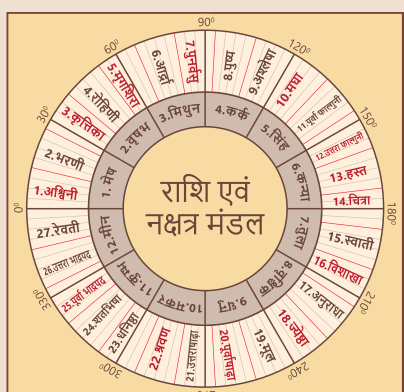 राशि एवं नक्षत्र मंडल	1 पौष कृष्ण पंचमी 14:28.8 तक षष्ठी प्रारम्भ	2 कृष्ण षष्ठी 17:11.2 तक सप्तमी प्रारम्भ	3 कृष्ण सप्तमी 19:48.6 तक अष्टमी प्रारम्भ	4 कृष्ण अष्टमी 22:05.2 तक नवमी प्रारम्भ	5 कृष्ण नवमी 23:46.6 तक दशमी प्रारम्भ	6 कृष्ण दशमी पूर्ण दिवस
7 कृष्ण दशमी 00:42.2 तक एकादशी प्रारम्भ	8 कृष्ण एकादशी 00:46.2 तक द्वादशी प्रारम्भ द्वादशी 23:59.1 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	9 कृष्ण त्रयोदशी 22:25.1 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	10 कृष्ण चतुर्दशी 20:11.2 तक अमावस्या प्रारम्भ	11 कृष्ण अमावस्या 17:27.3 तक पौष शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	12 पौष शुक्ल प्रथमा 14:23.9 तक द्वितीया प्रारम्भ	13 शुक्ल द्वितीया 11:11.5 तक तृतीया प्रारम्भ
14 शुक्ल तृतीया 08:00.4 तक चतुर्थी प्रारम्भ	15 शुक्ल चतुर्थी 04:59.7 तक पंचमी प्रारम्भ	16 शुक्ल पंचमी 02:17.1 तक षष्ठी प्रारम्भ षष्ठी 23:58.4 तक सप्तमी प्रारम्भ	17 शुक्ल सप्तमी 22:07.3 तक अष्टमी प्रारम्भ	18 शुक्ल अष्टमी 20:45.3 तक नवमी प्रारम्भ	19 शुक्ल नवमी 19:52.4 तक दशमी प्रारम्भ	20 शुक्ल दशमी 19:27.1 तक एकादशी प्रारम्भ
21 शुक्ल एकादशी 19:27.6 तक द्वादशी प्रारम्भ	22 शुक्ल द्वादशी 19:52.2 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	23 शुक्ल त्रयोदशी 20:39.9 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	24 शुक्ल चतुर्दशी 21:50.5 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	25 शुक्ल पूर्णिमा 23:24.0 तक माघ कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	26 माघ कृष्ण प्रथमा पूर्ण दिवस	27 कृष्ण प्रथमा 01:20.2 तक द्वितीया प्रारम्भ
28 कृष्ण द्वितीया 03:37.3 तक तृतीया प्रारम्भ	29 कृष्ण तृतीया 06:11.3 तक चतुर्थी प्रारम्भ	30 कृष्ण चतुर्थी 08:54.6 तक पंचमी प्रारम्भ	31 कृष्ण पंचमी 11:36.6 तक षष्ठी प्रारम्भ			

माह की खगोलीय घटनाएँ

8 जनवरी- चन्द्रमा-शुक्र युति। प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

14 जनवरी- चन्द्रमा-शनि युति। सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

18 जनवरी- चन्द्रमा-बृहस्पति युति। सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

माह के शासकीय अवकाश- 26 गणतंत्र दिवस

माह के ऐच्छिक अवकाश- 01 नववर्ष दिवस, 06 महर्षि गुरू गोकुलदास जी महाराज का जन्मदिवस,15 मकर संक्रान्ति/ पोंगल, 17 गुरु गोविंद सिंह जी का जन्मदिवस, 23 हजरत अली का जन्मदिवस

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान

भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर

वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2080

मिथुन राशि में मृगशीर्ष नक्षत्र के दो चरण, आर्द्रा नक्षत्र पूर्ण तथा पुनर्वसु नक्षत्र के तीन चरणों का समावेश होता है।

5 मृगशिरा

मृगशिरा का अर्थ होता है मृग का शीर्ष अर्थात् हिरन का सिर जो कि इस नक्षत्र का आकार भी है। यह नक्षत्र आकाश में 5वां सबसे महत्वपूर्ण नक्षत्र है। आकाश में सुपरिचित तारामंडल है मृगतारामण्डल। एक वैदिक कथा भी प्रसिद्ध है कि मृगरूपी प्रजापति रोहिणी का पीछा कर रहा है और व्याध मृग का पीछा कर रहा है। मृगमंडल का पाश्चात्य नाम ओरायन है। आर्द्रा के कुछ ऊपर रोहिणी की दिशा में तीन मंदकांति तारों का एक समूह है। मृग के सिर में स्थित होने के कारण भारतीय ज्योतिष में इन्हें मृगशीर्ष या मृगशिरा के नाम से जाना जाता है। इस समूह का सबसे चमकीला तारा भारतीय परंपरा के मृगशीर्ष नक्षत्र का योगतारा है । बाल गंगाधर तिलक ने अपने ओरियान ग्रंथ में प्रतिपादित किया है कि ऋग्वेद काल में बसंत विषुव-बिंदु मार्गशीर्ष में था और वर्षारंभ भी इसी नक्षत्र से होता था। यह तारे हमसे 450 प्रकाश वर्ष दूर हैं। मृगशिरा नक्षत्र के 3 प्रमुख चमकीले तारे सीधी रेखा में हैं जिन्हें त्रिकांड कहा जाता है और इन्हीं तारों के समूह से नक्षत्र के आकार को आसानी से पहचाना जा सकता है। नक्षत्र के स्वामी मंगल हैं और इसकी वनस्पति खैर है।

6 आर्द्रा

आर्द्रा का शाब्दिक अर्थ नमी होता है। ऋग्वेद में आर्द्रा शब्द का अर्थ भीगा हुआ के संदर्भ में हुआ है। आकाश मंडल में छठे स्थान पर आने वाला यह नक्षत्र राहु का नक्षत्र है। मृगतारामण्डल का प्रमुख तारा भारतीय ज्योतिष का प्रसिद्ध आर्द्रा नक्षत्र है। लाल रंग का यह तारा हमसे करीब 240 प्रकाश वर्ष दूर है। यह महादानव तारे का व्यास सूर्य के व्यास से करीब 400 गुना अधिक है। यदि आर्द्रा तारा हमारे सूर्य का स्थान ले तो मंगल तक के सभी ग्रह उसके उदर में समा जाएंगे। यह अन्य नक्षत्रों की तरह कई तारों का समूह न होकर, आर्द्रा एक अकेला तारा है, ये आकाश में मणि या किसी हीरे के सामान दिखाई पड़ता है। चारों चरण मिथुन राशि में स्थित होने के कारण आर्द्रा पर मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध का भी प्रभाव होता है। आंसू के समान प्रतीत होने वाले इस नक्षत्र की वनस्पति शीशम है।

7 पुनर्वसु

पुनर्वसु नक्षत्र 27 नक्षत्रों में से 7वें स्थान पर आता है। मृगतारामंडल के पूर्वोत्तर में पुनर्वसु नक्षत्र के तारे हैं। पुनर्वसु का शाब्दिक अर्थ है पुनः समृद्धि या धनवान होना। वैदिक काल में जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में पहुंचता था तो वर्षा का आरंभ होता था और पुनर्वसु नक्षत्र में पहुंचता था तो धान एवं जौ की नई फसल अंकुरित होती थी। पुनर्वसु के दो तारों को प्रायः सभी प्राचीन सभ्यताओं में जुड़वा, जोड़ी या युगल के रूप में पहचाना गया है। किसी सभ्यता में यह जोड़ी मानव की थी, तो किसी में पौधों या पशुओं या देवताओं की। पुनर्वसु के दो तारों के यूनानी नाम हैं- कैस्टर और पोलक्स। कैस्टर और पोलक्स तारे भौतिक गुणधर्मों में एक दूसरे से एकदम भिन्न हैं। नीले रंग का अतितप्त कैस्टर तारा हमसे 45 प्रकाश वर्ष दूर है। तो नारंगी रंग का पोलक्स करीब 33 प्रकाश वर्ष दूर है। कैस्टर वस्तुतः छः तारों की एक संयुक्त योजना है। इस नक्षत्र को बहुत शुभ माना जाता है। इस नक्षत्र के स्वामी बृहस्पति हैं। पुनर्वसु की वनस्पति बांस है और यह नक्षत्र रात्रि आकाश में धनुष या धर के समान दिखाई पड़ता है।

Kaliyugabd - 5125 | कलियुगाब्द - ५१२५

Magh-Falgun | February { फरवरी 2024 } माघ-फाल्गुन

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
माह की खगोलीय घटनाएँ	**7 फरवरी– चन्द्रमा-शुक्र युति।** प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। **8 फरवरी– चन्द्रमा-मंगल युति।** प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। **15 फरवरी– चन्द्रमा-बृहस्पति युति।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।		**22 फरवरी- मंगल-शुक्र युति।** प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में मंगल एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। शुक्र लट्टू की तरह चमकदार दिखाई देगा ।	1 **माघ कृष्ण** षष्ठी 14:04.1 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	2 **कृष्ण** सप्तमी 16:03.1 तक **अष्ठमी प्रारम्भ**	3 **कृष्ण** अष्ठमी 17:21.3 तक **नवमी प्रारम्भ**
4 **कृष्ण** नवमी 17:50.0 तक **दशमी प्रारम्भ**	5 **कृष्ण** दशमी 17:25.1 तक **एकादशी प्रारम्भ**	6 **कृष्ण** एकादशी 16:07.6 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	7 **कृष्ण** द्वादशी 14:02.4 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	8 **कृष्ण** त्रयोदशी 11:17.5 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	9 **कृष्ण** चतुर्दशी 08:02.8 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	10 **माघ शुक्ल** अमावस्या 04:29.2 तक **प्रथमा प्रारम्भ**
11 **माघ शुक्ल** प्रथमा 00:47.8 तक **द्वितीया प्रारम्भ** द्वितीया 21:09.6 तक **तृतीया प्रारम्भ**	12 **शुक्ल** तृतीया 17:44.9 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	13 **शुक्ल** चतुर्थी 14:42.6 तक **पंचमी प्रारम्भ**	14 **शुक्ल** पंचमी 12:10.2 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	15 **शुक्ल** षष्ठी 10:13.3 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	16 **शुक्ल** सप्तमी 08:55.1 तक **अष्ठमी प्रारम्भ**	17 **शुक्ल** अष्ठमी 08:16.5 तक **नवमी प्रारम्भ**
18 **शुक्ल** नवमी 08:16.0 तक **दशमी प्रारम्भ**	19 **शुक्ल** दशमी 08:50.6 तक **एकादशी प्रारम्भ**	20 **शुक्ल** एकादशी 09:56.1 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	21 **शुक्ल** द्वादशी 11:28.0तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	22 **शुक्ल** त्रयोदशी 13:22.1 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	23 **शुक्ल** चतुर्दशी15:34.2 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ**	24 **माघ शुक्ल** पूर्णिमा 18:00.4 तक **फाल्गुन कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**
25 **फाल्गुन कृष्ण** प्रथमा 20:36.4 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	26 **कृष्ण** द्वितीया 23:16.5 तक **तृतीया प्रारम्भ**	27 **कृष्ण** **तृतीया पूर्ण दिवस**	28 **कृष्ण** तृतीया 01:53.7 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	29 **कृष्ण** चतुर्थी 04:19.0 तक **पंचमी प्रारम्भ**		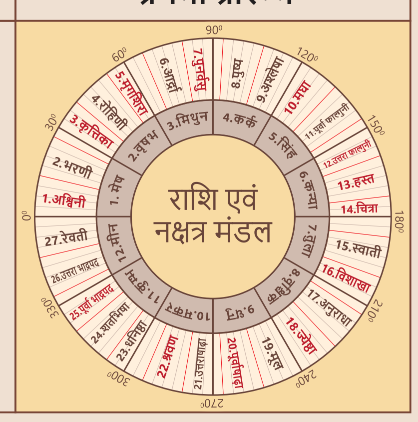

माह के शासकीय अवकाश- 24 संत रविदास जयन्ती (कोषागारों के लिए यह अवकाश नहीं)

माह के ऐच्छिक अवकाश- 14 बसन्त पंचमी,15 देवनारायण जयन्ती,16 नर्मदा जयन्ती, 19 छत्रपति शिवाजी जयन्ती, 23 स्वामी रामचरण जी महाराज का जन्मदिवस, 24 शबरी जयन्ती, 26 शब-ए-बारात

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2080

कर्क राशि में पुनर्वसु नक्षत्र का एक चरण, पुष्य नक्षत्र पूर्ण तथा आश्लेषा नक्षत्र पूर्ण का समावेश होता है।

8 | पुष्य

पुष्य का अर्थ है पुष्प। ऋग्वेद में पुष्य को तिष्य भी कहा गया है। तिष्य का अर्थ है शुभ या मांगलिक। पुष्य नक्षत्र के आधार पर ही पोष या पूस का महीना अस्तित्व में आया। पुष्य नाम इसलिए पड़ा कि नए अंकुर बढ़ें और फलित-पोषित हों। उसे उन्होंने सिद्ध नाम से पुकारा है। कर्क तारामंडल के डेल्टा, गामा और थीटा तारे पुष्य नक्षत्र के द्योतक माने गए हैं। इस नक्षत्र में 3 तारे तीर के आगे के तिकोने त्रिकोण के समान प्रतीत होते हैं। इसमें डेल्टा तारा पुष्य नक्षत्र का योग तारा है। कांतिमान 4.3 वाले इस तारे की विशेषता यह है कि यह क्रांतिवृत्त पर स्थित है। भारतीय ज्योतिष और धार्मिक क्रिया पद्धति में पुष्य नक्षत्र को श्रेष्ठ नक्षत्र माना जाता है। आंठवे स्थान पर आने वाले इस नक्षत्र की वनस्पति पीपल है तथा इसका आकार स्तन के समान है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार, पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा माना गया है और इसके स्वामी शनि हैं।

९ | अश्लेषा

अश्लेषा नक्षत्र 9वें स्थान पर आता है। अश्लेषा का अर्थ आलिंगन करना अर्थात् गले लगाना होता है। अश्लेषा नाम इसलिए पड़ा कि धान या जौ के पौधे इतने बड़े हो गए कि वह एक दूसरे का आलिंगन करने लगे। भारतीय ज्योतिष परंपरा में अश्लेषा नक्षत्र के अंतर्गत प्रायः 6 तारों का समावेश किया जाता है। मगर अश्लेषा के योग तारे के बारे में भारतीय ज्योतिषी एक मत नहीं हैं वैदिक साहित्य के अनुसार अश्लेषा के देवता या स्वामी सर्प हैं। इसलिए कई खगोलविद् सर्पमंडल के इप्सिलोन तारे को अश्लेषा का योगतारा मानते हैं परंतु कुछ अन्य ज्योतिषियों ने कर्क मंडल के अल्फा तारे को अश्लेषा का योग तारा माना है। सर्पाकार होने के कारण यह नक्षत्र सर्पराज वासुकि के मस्तक पर विराजित है। इसके चारों चरण कर्क राशि में स्थित हैं जिसके कारण इस पर राशि के स्वामी चंद्र का प्रभाव रहता है। नक्षत्र के स्वामी बुध ग्रह हैं और वनस्पति चंपा है।

Kaliyugabd - 5125 | कलियुगाब्द - ५१२५

Phalguna-Chaitra | March { मार्च 2024 } फाल्गुन- चैत्र

माह की खगोलीय घटनाएँ

8 मार्च- चन्द्रमा- मंगल युति। प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

21 मार्च- सूर्य विषुवत रेखा पर लम्बवत होने के कारण दिन व रात बराबर (12-12 घण्टे के) होंगे।

21 मार्च- शनि - शुक्र युति। प्रातः सूर्योदय से पहले शनि एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। शुक्र लट्टू की तरह चमकदार दिखाई देगा।

25 मार्च- प्रतिच्छाया चन्द्र ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार प्रातः 10:21:00 बजे पर होगा, मध्य की स्थित दोपहर 12:42:8 पर एवं मोक्ष दोपहर 15:04:08 पर होगा।

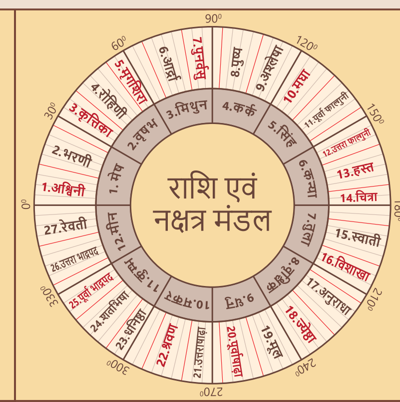

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
31 कृष्ण षष्ठी 21:31.5 तक सप्तमी प्रारम्भ					**1** फाल्गुन कृष्ण पंचमी 06:22.6 तक षष्ठी प्रारम्भ	**2** कृष्ण षष्ठी 07:54.2 तक सप्तमी प्रारम्भ
3 कृष्ण सप्तमी 08:45.2 तक अष्टमी प्रारम्भ	**4** कृष्ण अष्टमी 08:49.5 तक नवमी प्रारम्भ	**5** कृष्ण नवमी 08:04.4 तक दशमी प्रारम्भ	**6** कृष्ण दशमी 06:31.2 तक एकादशी प्रारम्भ	**7** कृष्ण एकादशी 04:14.1 तक द्वादशी प्रारम्भ	**8** कृष्ण द्वादशी 01:20.2 तक त्रयोदशी प्रारम्भ त्रयोदशी 21:58.2 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**9** फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी 18:18.2 तक अमावस्या प्रारम्भ
10 कृष्ण अमावस्या 14:30.4 तक प्रथमा प्रारम्भ	**11** फाल्गुन शुक्ल प्रथमा 10:45.5 तक द्वितीया प्रारम्भ	**12** शुक्ल द्वितीया 07:13.6 तक तृतीया प्रारम्भ	**13** शुक्ल तृतीया 04:04.4 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**14** शुक्ल चतुर्थी 01:26.4 तक पंचमी प्रारम्भ पंचम 23:26.6 तक षष्ठी प्रारम्भ	**15** शुक्ल षष्ठी 22:10.0 तक सप्तमी प्रारम्भ	**16** शुक्ल सप्तमी 21:39.1 तक अष्टमी प्रारम्भ
17 शुक्ल अष्टमी 21:53.5 तक नवमी प्रारम्भ	**18** शुक्ल नवमी 22:49.8 तक दशमी प्रारम्भ	**19** शुक्ल दशमी पूर्ण दिवस	**20** शुक्ल दशमी 00:22.3 तक एकादशी प्रारम्भ	**21** शुक्ल एकादशी 02:23.4 तक द्वादशी प्रारम्भ	**22** शुक्ल द्वादशी 04:44.8 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**23** शुक्ल त्रयोदशी 07:18.1 तक चतुर्दशी प्रारम्भ
24 शुक्ल चतुर्दशी 09:55.6 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**25** शुक्ल पूर्णिमा 12:30.3 तक चैत्र कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**26** चैत्र कृष्ण प्रथमा 14:56.1 तक द्वितीया प्रारम्भ	**27** कृष्ण द्वितीया 17:06.9 तक तृतीया प्रारम्भ	**28** कृष्ण तृतीया 18:57.2 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**29** कृष्ण चतुर्थी 20:21.4 तक पंचमी प्रारम्भ	**30** कृष्ण पंचमी 21:14.3 तक षष्ठी प्रारम्भ

माह के शासकीय अवकाश- 08 महाशिवरात्रि, 25 होली, 29 पुण्य शुक्रवार (गुड फ्रायडे)।

माह के ऐच्छिक अवकाश- 5 महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस, 08 एकलव्य जयंती, 18 टोडरमल जयंती, 20 वीरांगना अवंतीबाई का बलिदान दिवस, 27 भाईदूज

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान

भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर

वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2080-81

सिंह राशि में मघा नक्षत्र पूर्ण, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पूर्ण तथा उत्तरा फाल्गुनी के एक चरण का समावेश होता है।

10 | मघा

नक्षत्र मंडल में मघा 10वें स्थान पर स्थित है। सिंह राशि का सबसे चमकीला मघा नक्षत्र लगभग क्रांतिव्रत पर स्थित है। छः तारों का यह समूह आकाश में किसी पालकी या शाही सिंहासन के समान प्रतीत होता है। मघा तारा नीले-सफेद रंग का है। यह 1.3 क्रांतिमान का तारा है और हमसे करीब 85 प्रकाश वर्ष दूर है। यह एक काफी बड़ा तारा है इसका व्यास सूर्य के व्यास से करीब तीन गुना अधिक है। मघा वास्तव में एक युग्म अथवा जुड़वा तारा है।

इस नक्षत्र के तारों की संख्या को लेकर काफी मतभेद रहे हैं क्योंकि मान्यताओं के अनुसार मघा नक्षत्र में 6 नहीं 5 तारें होते हैं। अंग्रेज़ी के रेगुलस तारे से मेल खाने वाले इस नक्षत्र का स्वामी केतु ग्रह है और इसकी वनस्पति वट है। इसे ऋग्वेद में अघा भी कहा गया है। जिसका अर्थ है धन या धनदान। मघा नाम इसलिए पड़ा क्योंकि वैदिक काल में सूर्य जब इस नक्षत्र में पहुंचता था तो धान और अन्य पौधों की फसल काटने के लिए तैयार हो जाती थी।

11 | पूर्वा फाल्गुनी

अपने चार चरणों के साथ सिंह राशि में स्थित पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र मंडल में 11वें स्थान का नक्षत्र है। आकाश में इस नक्षत्र के 2 तारे दिखते हैं जो किसी पलंग या लकड़ी से बनी मेज़ के आगे के 2 पैरों को दर्शाते हैं। पूर्वा फाल्गुनी के ग्रह स्वामी शुक्र हैं और इसकी वनस्पति पलाश का पेड़ है। इस नक्षत्र को भगदेवता के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसके स्वामी धन और समृद्धि के देवता भग हैं। पूर्वी क्षितिज पर पहले उदय होने वाले नक्षत्र को पूर्वा फाल्गुनी और बाद में उदित होने वाले नक्षत्र को उत्तरा फाल्गुनी नाम दिया गया है। पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र सिंह राशि के पुट्ठे पर स्थित है। दो फाल्गुनी का उल्लेख ऋग्वेद में भी है।

12 | उत्तरा फाल्गुनी

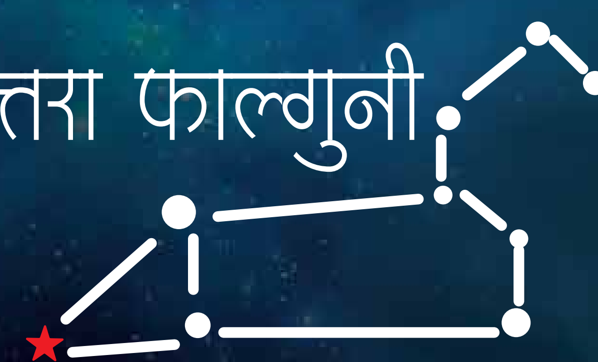

12वें स्थान का नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र कहलाता है। सिंह राशि के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का पाश्चात्य नाम देनेबोला या देनब है। यह तारा सिंह की पूंछ पर स्थित है। उत्तरा फाल्गुनी द्वितीय कांतिमान का नक्षत्र है। अंग्रेजी में 'द लेटर रेड लूनर मेन्शन' के नाम से जाना जाने वाले इस नक्षत्र के स्वामी सूर्य हैं। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र की वनस्पति कनेर का पेड़ होता है तथा आकाश में इसकी पहचान तारामंडल के चमकीले तारे अल्फा लियोनिस से होती है। उत्तरा फाल्गुनी में 2 तारे होते हैं जो आकाश में पलंग के पीछे के पैरों के आकार के दिखते हैं। यह नक्षत्र एक जुड़वा नक्षत्र का हिस्सा है और इसके स्वामी आर्यमन हैं।

Kaliyugabd - 5125-5126 | कलियुगाब्द - ५१२५-५१२६

Chaitra-Vaisakha | March

अप्रैल 2024

चैत्र-वैशाख

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
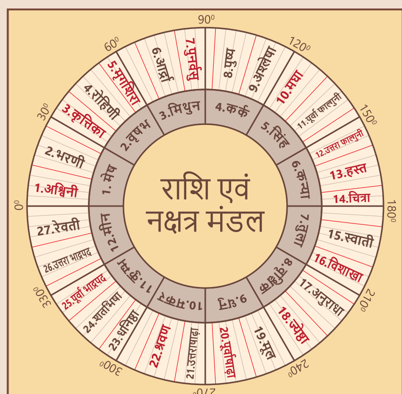	**1** चैत्र कृष्ण सप्तमी 21:10.2 तक अष्टमी प्रारम्भ	**2** कृष्ण अष्टमी 20:09.2 तक नवमी प्रारम्भ	**3** कृष्ण नवमी 18:29.6 तक दशमी प्रारम्भ	**4** कृष्ण दशमी 16:14.6 तक एकादशी प्रारम्भ	**5** कृष्ण एकादशी 13:29.0 तक द्वादशी प्रारम्भ	**6** कृष्ण द्वादशी 10:19.7 तक त्रयोदशी प्रारम्भ
7 कृष्ण त्रयोदशी 06:54.3 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**8** कृष्ण चतुर्दशी 03:21.6 तक अमावस्या प्रारम्भ अमावस्या 23:50.9 तक चैत्र शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	नववर्ष प्रारम्भ कलियुगाब्द ५१२६ **9** चैत्र शुक्ल प्रथमा 20:31.5 तक द्वितीया प्रारम्भ	**10** शुक्ल द्वितीया 17:32.8 तक तृतीया प्रारम्भ	**11** शुक्ल तृतीया 15:03.8 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**12** शुक्ल चतुर्थी 13:12.3 तक पंचमी प्रारम्भ	**13** शुक्ल पंचमी 12:04.6 तक षष्ठी प्रारम्भ
14 शुक्ल षष्ठी 11:44.4 तक सप्तमी प्रारम्भ	**15** शुक्ल सप्तमी 12:12.1 तक अष्टमी प्रारम्भ	**16** शुक्ल अष्टमी 13:24.5 तक नवमी प्रारम्भ	**17** शुक्ल नवमी 15:14.6 तक दशमी प्रारम्भ	**18** शुक्ल दशमी 17:32.1 तक एकादशी प्रारम्भ	**19** शुक्ल एकादशी 20:05.3 तक द्वादशी प्रारम्भ	**20** शुक्ल द्वादशी 22:42.1 तक त्रयोदशी प्रारम्भ
21 शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण दिवस	**22** शुक्ल त्रयोदशी 01:11.9 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**23** शुक्ल चतुर्दशी 03:26.2 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**24** चैत्र शुक्ल पूर्णिमा 05:19.0 तक वैशाख शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	**25** वैशाख कृष्ण प्रथमा 06:46.4 तक द्वितीया प्रारम्भ	**26** कृष्ण द्वितीया 07:46.6 तक तृतीया प्रारम्भ	**27** कृष्ण तृतीया 08:18.6 तक चतुर्थी प्रारम्भ
28 कृष्ण चतुर्थी 08:22.2 तक पंचमी प्रारम्भ	**29** कृष्ण पंचमी 07:57.7 तक षष्ठी प्रारम्भ	**30** कृष्ण षष्ठी 07:05.6 तक सप्तमी प्रारम्भ				

माह की खगोलीय घटनाएँ

6 अप्रैल- चन्द्रमा- मंगल युति। प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

6 अप्रैल- चन्द्रमा- शनि युति। प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

10 अप्रैल- चन्द्रमा- बृहस्पति युति। सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

11 अप्रैल- शनि - मंगल युति। प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में क्षितिज से लगभग 35 अंश ऊपर शनि एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

8-9 अप्रैल- पूर्ण सूर्य ग्रहण। भारत में दृश्य नहीं होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार रात्रि 22:10:00 बजे पर होगा, मध्य की स्थित रात्रि 23:47:03 पर एवं मोक्ष रात्रि 01:24:05 पर होगा।

माह के शासकीय अवकाश- 1 बैंक की वार्षिक लेखाबंदी (केवल कोषागारों के लिए), 09 गुड़ी पड़वा/ महर्षि गौतम जयंती,10 चैतीचांद (9 व 10 का अवकाश कोषागारों के लिए नहीं), 11 ईद-उल-फितर, 17 रामनवमी

माह के ऐच्छिक अवकाश- 05 भक्त माता कर्मा जयंती/ जमात-उल-विदा, 09 ईद-उल-फितर (के ठीक पूर्व का दिवस), 11 महात्मा ज्योतिबा फुले जयन्ती/भगवान मीनेष जयंती, 13 निषादराज जयंती, 22 हाटकेश्वर जयंती

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2081

कन्या राशि में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के तीन चरण, हस्त नक्षत्र पूर्ण तथा चित्रा नक्षत्र के दो चरणों का समावेश होता है।

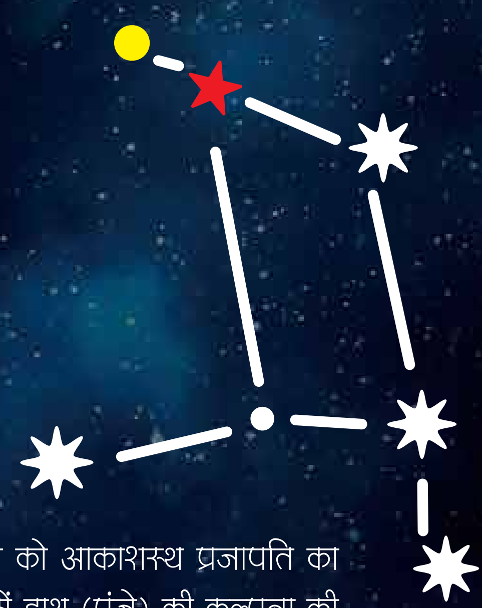

13 | हस्त

हस्त नक्षत्र 27 नक्षत्रों में से 13वां नक्षत्र है। वैदिक साहित्य में हस्त को आकाशस्थ प्रजापति का हाथ कहा गया है। हस्त नक्षत्र के पांच प्रमुख तारों के आधार पर इसमें हाथ (पंजे) की कल्पना की गई है। यह एक चंद्रमा प्रधान नक्षत्र है अर्थात् इसका स्वामी चंद्र है और इसके चारों चरण कन्या राशि में स्थित हैं जिसके कारण इस पर कन्या राशि के स्वामी बुध का भी प्रभाव रहता है। इस नक्षत्र की वनस्पति चमेली है। हस्त नक्षत्र के देवता 'सवितार' हैं जो सूर्य का ही एक रूप है।

14 | चित्रा

27 नक्षत्रों में सबसे ज़्यादा चमकने वाला नक्षत्र, चित्रा नक्षत्र 14वें स्थान पर आता है। वैदिक साहित्य में चित्रा नक्षत्र को आकाशस्थ प्रजापति का सिर कहा गया है। भारतीय ज्योतिष में चित्रा नक्षत्र का प्राचीन काल से ही बड़ा महत्व रहा है। यह चमकीला नक्षत्र लगभग क्रांतिवृत पर स्थित है। ऋग्वेद में चित्रा का उल्लेख हुआ है। इसका स्वामी मंगल है। चित्रा के 2 चरण कन्या और 2 चरण तुला राशि में स्थित हैं। चित्रा नक्षत्र को अंग्रेजी में सोलिटरी स्टार भी कहा जाता है क्योंकि अपने नक्षत्र में यह एकमात्र प्रधान तारा है। मोती के समान आकाश में दिखने वाले इस नक्षत्र की वनस्पति बेल का पेड़ है। चैत्र माह का नाम चित्रा नक्षत्र के आधार पर ही रखा गया है।

Kaliyugabd - 5126 | कलियुगाब्द - ५१२६

Vaisakha- Jaistha | May { मई 2024 } वैशाख-ज्येष्ठ

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
माह की खगोलीय घटनाएँ **3 मई- चन्द्रमा-शनि युति।** प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे । **5 मई- चन्द्रमा-मंगल युति।** प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे । **6 मई- चन्द्रमा-बुध युति।** प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं बुध ग्रह एक साथ दिखाई देंगे			1 **वैशाख कृष्ण** सप्तमी 05:46.5 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	2 **कृष्ण** अष्टमी 04:01.8 तक **नवमी प्रारम्भ**	3 **कृष्ण** नवमी 01:53.5 तक **दशमी प्रारम्भ** दशमी 23:24.6 तक **एकादशी प्रारम्भ**	4 **कृष्ण** एकादशी 20:39.1 तक **द्वादशी प्रारम्भ**
5 **कृष्ण** द्वादशी 17:42.4 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	6 **कृष्ण** त्रयोदशी 14:40.6 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	7 **कृष्ण** चतुर्दशी 11:41.1 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	8 **कृष्ण** अमावस्या 08:51.9 तक **वैशाख शुक्ल** **प्रथमा प्रारम्भ**	9 **वैशाख शुक्ल** प्रथमा 06:21.5 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	10 **शुक्ल** द्वितीया 04:18.4 तक **तृतीया प्रारम्भ**	11 **शुक्ल** तृतीया 02:50.6 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**
12 **शुक्ल** चतुर्थी 02:04.6 तक **पंचमी प्रारम्भ**	13 **शुक्ल** पंचमी 02:04.4 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	14 **शुक्ल** षष्ठी 02:50.7 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	15 **शुक्ल** सप्तमी 04:19.8 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	16 **शुक्ल** अष्टमी 06:23.4 तक **नवमी प्रारम्भ**	17 **शुक्ल** नवमी 08:49.4 तक **दशमी प्रारम्भ**	18 **शुक्ल** दशमी 11:23.2 तक **एकादशी प्रारम्भ**
19 **शुक्ल** एकादशी 13:50.6 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	20 **शुक्ल** द्वादशी 15:59.1 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	21 **शुक्ल** त्रयोदशी 17:40.0 तक **चर्तुदशी प्रारम्भ**	22 **शुक्ल** चर्तुदशी 18:48.4 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ**	23 **शुक्ल** पूर्णिमा 19:23.1 तक **ज्येष्ठ कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**	24 **ज्येष्ठ कृष्ण** प्रथमा 19:25.4 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	25 **कृष्ण** द्वितीया 18:58.7 तक **तृतीया प्रारम्भ**
26 **कृष्ण** तृतीया 18:06.8 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	27 **कृष्ण** चतुर्थी 16:54.1 तक **पंचमी प्रारम्भ**	28 **कृष्ण** पंचमी 15:24.2 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	29 **कृष्ण** षष्ठी 13:40.2 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	30 **कृष्ण** सप्तमी 11:44.4 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	31 **कृष्ण** अष्टमी 09:38.7 तक **नवमी प्रारम्भ**	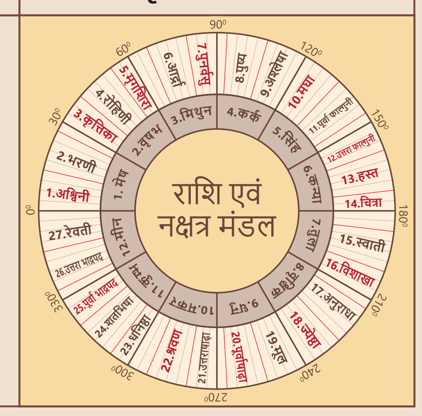

माह के शासकीय अवकाश- 10 परशुराम जयंती (कोषागारों के लिए नहीं), 23 बुद्ध पूर्णिमा ।

माह के ऐच्छिक अवकाश- 04 वल्लभाचार्य जयंती , 10 अक्षय तृतीया, 14 श्री चित्रगुप्त जी का प्रकट उत्सव, 15 केवट जयंती, 31 माँ अहिल्याबाई का जन्मदिवस

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान

भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर

वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2081

तुला राशि में चित्रा नक्षत्र के दो चरण, स्वाती नक्षत्र पूर्ण तथा विशाखा नक्षत्र के तीन चरणों का समावेश होता है।

15 | स्वाती

स्वाति को वैदिक काल से ही एक महत्वपूर्ण नक्षत्र माना जाता रहा है। भारतीय लोक कथा के अनुसार चातक पक्षी स्वाति नक्षत्र में होने वाली वर्षा का ही जल पीता है। स्वाति नक्षत्र में होने वाली वर्षा से सीप में अच्छा मोती बनता है। स्वाति का एक अर्थ खड्ग या तलवार भी है। भारतीय परंपरा में इसे एक मणि, रत्न या मोती के रूप में भी चित्रांकित किया गया है। स्वाति बहुत चमकीला नक्षत्र है। इसका व्यास सूर्य से करीब 25 गुना अधिक है एवं यह 36 प्रकाश वर्ष दूर है। काफी बड़ा व नज़दीक होने के कारण अधिक चमकीला नजर आता है। अंग्रेजी में आर्कटुरस कहा जाने वाला स्वाति नक्षत्र, ग्वाला तारामंडल में स्थित है। नारंगी रंग का यह तारा, आकाश में एकमात्र ऐसा तारा है जो हवा में उड़ती घास की पत्ती या डाल की तरह दिखाई पड़ता है। यह 15वां नक्षत्र है जिसकी वनस्पति अर्जुन का वृक्ष है। पवन देव के स्वामित्व में स्थित है। नक्षत्र के ग्रह स्वामी राहु हैं।

16 | विशाखा

ज्योतिष के अनुसार विशाखा नक्षत्र का स्थान 16वां है। नक्षत्र के 3 चरण तुला राशि और एक चरण वृश्चिक राशि में स्थित हैं एवं इसके स्वामी गुरु हैं। 4 प्रमुख तारों का यह समूह रात्रि के आकाश में एक तराजू या बर्तन के आकार में दिखता है। विशाखा नक्षत्र की वनस्पति कैथ का पेड़ है। वैदिक साहित्य में कृत्तिका से विशाखा तक के नक्षत्र देव नक्षत्र माने गए हैं। विशाखा नक्षत्र के देवता इन्द्राग्नि बताए गए हैं।

Kaliyugabd - 5126 | कलियुगाब्द - ५१२६

Jaistha–Ashadha | June

जून 2024

ज्येष्ठ - आषाढ

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
30 कृष्ण नवमी 12:19.7 तक दशमी प्रारम्भ	**माह की खगोलीय घटनाएँ**	**2 जून- चन्द्रमा-मंगल युति।** प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे । **21 जून- सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत** होने के कारण उत्तरी गोलार्द्ध में दिन सबसे बड़ा तथा रात सबसे छोटी होगी। इस दिन स्थानीय समय 12 बजे (उज्जैन के लिए 12:28 बजे) कर्क रेखा के नजदीक स्थित म.प्र. के समस्त स्थानों पर परछाई कुछ समय के लिए शून्य हो जाएगी।			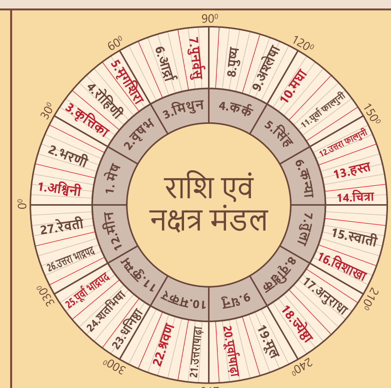 राशि एवं नक्षत्र मंडल	**1** ज्येष्ठ कृष्ण नवमी 07:24.9 तक दशमी प्रारम्भ
2 कृष्ण दशमी 05:05.0 तक एकदशी प्रारम्भ	**3** कृष्ण एकदशी 02:41.8 तक द्वादशी प्रारम्भ	**4** कृष्ण द्वादशी 00:18.9 तक त्रयोदशी प्रारम्भ त्रयोदशी 22:01.5 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**5** कृष्ण चतुर्दशी 19:55.5 तक अमावस्या प्रारम्भ	**6** कृष्ण अमावस्या 18:07.8 तक ज्येष्ठ शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	**7** ज्येष्ठ शुक्ल प्रथमा 16:45.6 तक द्वितीया प्रारम्भ	**8** शुक्ल द्वितीया 15:56.1 तक तृतीया प्रारम्भ
9 शुक्ल तृतीया 15:44.9 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**10** शुक्ल चतुर्थी 16:15.6 तक पंचमी प्रारम्भ	**11** शुक्ल पंचमी 17:27.9 तक षष्ठी प्रारम्भ	**12** शुक्ल षष्ठी 19:17.2 तक सप्तमी प्रारम्भ	**13** शुक्ल सप्तमी 21:33.9 तक अष्ठमी प्रारम्भ	**14** शुक्ल अष्ठमी पूर्ण दिवस	**15** शुक्ल अष्ठमी 00:04.5 तक नवमी प्रारम्भ
16 शुक्ल नवमी 02:33.0 तक दशमी प्रारम्भ	**17** शुक्ल दशमी 04:44.1 तक एकादशी प्रारम्भ	**18** शुक्ल एकादशी 06:25.3 तक द्वादशी प्रारम्भ	**19** शुक्ल द्वादशी 07:28.5 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**20** शुक्ल त्रयोदशी 07:50.5 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**21** शुक्ल चतुर्दशी 07:32.2 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**22** ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा 06:37.9 तक आषाढ कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ
23 आषाढ कृष्ण प्रथमा 05:13.6 तक द्वितीया प्रारम्भ	**24** कृष्ण द्वितीया 03:26.5 तक तृतीया प्रारम्भ	**25** कृष्ण तृतीया 01:23.7 तक चतुर्थी प्रारम्भ चतुर्थी 23:11.6 तक पंचमी प्रारम्भ	**26** कृष्ण पंचमी 20:55.7 तक षष्ठी प्रारम्भ	**27** कृष्ण षष्ठी 18:40.1 तक सप्तमी प्रारम्भ	**28** कृष्ण सप्तमी 16:27.7 तक अष्ठमी प्रारम्भ	**29** कृष्ण अष्ठमी 14:20.5 तक नवमी प्रारम्भ

माह के शासकीय अवकाश- 17 ईदुज्जुहा।

माह के ऐच्छिक अवकाश- 15 महेश जयंती, 20 बड़ा महादेव पूजन, 22 कबीर जयंती, 24 वीरांगना दुर्गावती का बलिदान दिवस/ गदीर-ए-खुम।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2081

वृश्चिक राशि में विशाखा नक्षत्र का एक चरण, अनुराधा नक्षत्र पूर्ण तथा ज्येष्ठा नक्षत्र पूर्ण का समावेश होता है।

17 | अनुराधा

अपने 4 चरणों के साथ वृश्चिक राशि में स्थित अनुराधा नक्षत्र 17वां नक्षत्र है। आकाश में कमल के फूल के आकार में दिखने वाला यह नक्षत्र मुख्यत: 4 तारों का समूह है। वृश्चिक के मुंह के तारे अनुराधा नक्षत्र कहलाते हैं। अनुराधा नक्षत्र के स्वामी शनि हैं पर वृश्चिक राशि में होने के कारण राशि के स्वामी मंगल का भी नक्षत्र पर प्रभाव रहता है। अनुराधा नक्षत्र का सम्बन्ध राधा के साथ स्थापित किया गया है और इसका अर्थ होता है राधा का अनुगमन करने वाला। इस नक्षत्र की वनस्पति मौलसरी है।

18 | ज्येष्ठा

ज्येष्ठा का अर्थ है ज्येष्ठ या वरिष्ठम। ज्येष्ठा नक्षत्र एक गंडमूल नक्षत्र है जिसके चारों चरण वृश्चिक राशि में स्थित हैं। आकाश में छतरी के आकार का दिखने वाला यह नक्षत्र 3 तारों का समूह होता है। वृश्चिक के हृदय के तारे ज्येष्ठा नक्षत्र कहलाते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र लाल रंग का है। यह नक्षत्र रोहिणी के लगभग विपरीत दिशा में स्थित है। यह एक महादानव तारा है। इसका व्यास सूर्य से 400 गुना अधिक है तथा यह 173 प्रकाश वर्ष दूर है। नक्षत्र का स्वामी बुध है और इस पर वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल का भी प्रभाव रहता है। 27 नक्षत्रों में से 18वें स्थान पर आने वाले इस नक्षत्र की वनस्पति चीड़ है। नक्षत्र के स्वामी इंद्र हैं।

19 | मूल

मूल नक्षत्र 27 नक्षत्रों में से 19वां नक्षत्र है। वृश्चिक के डंक के तारे मूल नक्षत्र कहलाते हैं। इस नक्षत्र में 11 तारे हैं जो बिच्छू की डंक या पूँछ की तरह दिखते हैं। यह 360 प्रकाश वर्ष दूर है। मूल नक्षत्र गंडमूल के अंतर्गत आता है। यह नक्षत्र धनु राशि में 0 अंश से लेकर 13 अंश 20 मिनट तक फैला हुआ है। इस नक्षत्र के देवता नृति हैं और स्वामी ग्रह केतु हैं। मूल नक्षत्र का अर्थ है जड़ और इसके चारों चरण धनु राशि के अंतर्गत आते हैं। मूल नक्षत्र की वनस्पति है साल या साखू का पेड़।

Kaliyugabd - 5126 | कलियुगाब्द - ५१२६

Ashadha- Sravana | July { जुलाई 2024 } आषाढ-श्रावण

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
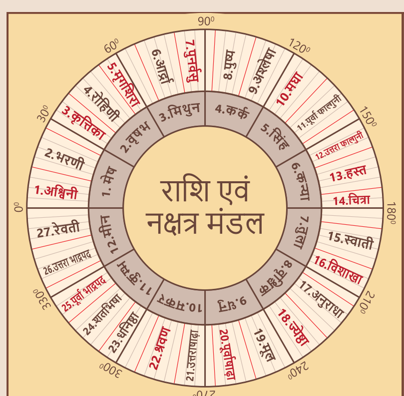	**1** आषाढ कृष्ण दशमी 10:26.6 तक एकादशी प्रारम्भ	**2** कृष्ण एकादशी 08:42.8 तक द्वादशी प्रारम्भ	**3** कृष्ण द्वादशी 07:10.9 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**4** कृष्ण त्रयोदशी 06:54.6 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**5** कृष्ण चतुर्दशी 04:58.4 तक अमावस्या प्रारम्भ	**6** आषाढ शुक्ल अमावस्या 04:27.4 तक प्रथमा प्रारम्भ
7 शुक्ल प्रथमा 04:26.6 तक द्वितीया प्रारम्भ	**8** शुक्ल द्वितीया 05:00.0 तक तृतीया प्रारम्भ	**9** शुक्ल तृतीया 06:09.2 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**10** शुक्ल चतुर्थी 07:52.6 तक पंचमी प्रारम्भ	**11** शुक्ल पंचमी 10:04.1 तक षष्टी प्रारम्भ	**12** शुक्ल षष्टी 12:33.3 तक सप्तमी प्रारम्भ	**13** शुक्ल सप्तमी 15:06.1 तक अष्टमी प्रारम्भ
14 शुक्ल अष्टमी 17:26.5 तक नवमी प्रारम्भ	**15** शुक्ल नवमी 19:19.7 तक दशमी प्रारम्भ	**16** शुक्ल दशमी 20:34.2 तक एकादशी प्रारम्भ	**17** शुक्ल एकादशी 21:03.1 तक द्वादशी प्रारम्भ	**18** शुक्ल द्वादशी 20:44.8 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**19** शुक्ल त्रयोदशी 19:41.8 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**20** शुक्ल चतुर्दशी 17:59.09 तक पूर्णिमा प्रारम्भ
21 आषाढ शुक्ल पूर्णिमा 15:47.1 तक श्रावण कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**22** श्रावण कृष्ण प्रथमा 13:12.1 तक द्वितीया प्रारम्भ	**23** कृष्ण द्वितीया 10:23.8 तक तृतीया प्रारम्भ	**24** कृष्ण तृतीया 07:30.7 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**25** कृष्ण चतुर्थी 04:40.3 तक पंचमी प्रारम्भ	**26** कृष्ण पंचमी 01:58.8 तक षष्ठी प्रारम्भ षष्ठी 23:31.0 तक सप्तमी प्रारम्भ	**27** कृष्ण सप्तमी 21:20.0 तक अष्टमी प्रारम्भ
28 कृष्ण अष्टमी 19:28.1 तक नवमी प्रारम्भ	**29** कृष्ण नवमी 17:56.3 तक दशमी प्रारम्भ	**30** कृष्ण दशमी 16:45.4 तक एकादशी प्रारम्भ	**31** कृष्ण एकादशी 15:56.1 तक द्वादशी प्रारम्भ	माह की खगोलीय घटनाएँ	1 जुलाई- चन्द्रमा-मंगल युति। प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। 24 जुलाई- चन्द्रमा-शनि युति। सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एकसाथ दिखाई देंगे।	

माह के शासकीय अवकाश- 17 मुहर्रम।

माह के ऐच्छिक अवकाश- 16 यौम-ए-आशूरा

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2081

धनु राशि में मूल नक्षत्र पूर्ण, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पूर्ण तथा उत्तराषाढ़ा के एक चरण का समावेश होता है।

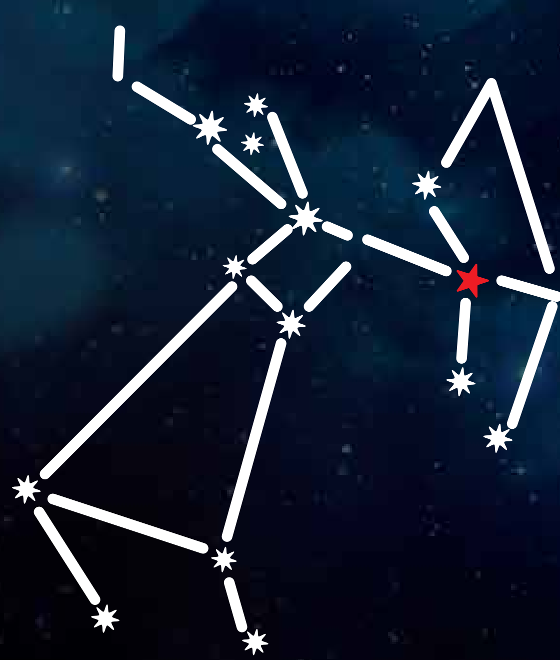

20 | पूर्वाषाढ़ा

27 नक्षत्रों की श्रृंखला में पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र 20वां नक्षत्र है। इस नक्षत्र की पहचान करने के लिए आकाश में 2-2 तारे मिलकर एक समकोण बनाते हैं। पूर्वाषाढ़ा का आकार गज दंत अर्थात् हाथी दांत के समान प्रतीत होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र को जल नक्षत्र भी कहा जाता है। पूर्वाषाढ़ा का अर्थ है पहले वाला अपराजेय, जिसे जीत पाना असंभव हो। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के देवता हैं जल और स्वामी शुक्र हैं। इसके चारों चरण धनु राशि में स्थित हैं और इसकी वनस्पति बैंत होता है।

21 | उत्तराषाढ़ा

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र 27 नक्षत्रों में से 21वां नक्षत्र है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र अगस्त के महीने में आकाश की उत्तर-दक्षिण दिशा में देखा जा सकता है। इस नक्षत्र में एक मंच या चारपाई का आकार प्रतीत होता है अर्थात् पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा के 4-4 तारे पिंजरे की भांति एक तारे पर लटके हुए दिखाई देते हैं। इस नक्षत्र के स्वामी सूर्य, वनस्पति कटहल और देवता विश्वदेव हैं। उत्तराषाढ़ा का एक चरण धनु राशि में और तीन चरण मकर राशि में स्थित हैं।

Kaliyugabd - 5126 | **कलियुगाब्द - ५१२६**

Sravan–Bhadra | August { अगस्त 2024 } श्रावण-भाद्र

माह की खगोलीय घटनाएँ

6 अगस्त- चन्द्रमा-बुध युति।
सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बुध ग्रह एक साथ दिखाई देंगे ।
14 अगस्त- बृहस्पति-मंगल युति।
प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में क्षितिज से लगभग 60 अंश ऊपर बृहस्पति एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे ।
21 अगस्त- चन्द्रमा-शनि युति।
सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एकसाथ दिखाई देंगे।

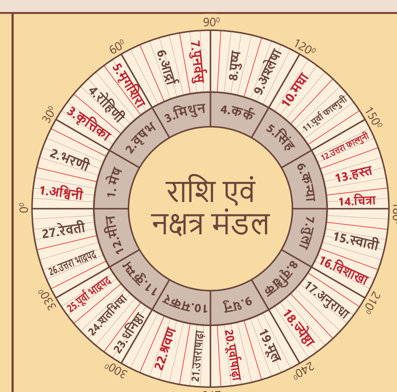

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरुवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
				1 **श्रावण कृष्ण** द्वादशी 15:29.5 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**2** **कृष्ण** त्रयोदशी 15:27.2 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**3** **कृष्ण** चतुर्दशी 15:51.1 तक **अमावस्या प्रारम्भ**
4 **श्रावण कृष्ण** अमावस्या 16:43.1 तक **प्रथमा प्रारम्भ**	**5** **श्रावण शुक्ल** प्रथमा 18:04.0 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**6** **शुक्ल** द्वितीया 19:53.0 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**7** **शुक्ल** तृतीया 22:06.4 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**8** **शुक्ल** **चतुर्थी पूर्ण दिवस**	**9** **शुक्ल** चतुर्थी 00:37.2 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**10** **शुक्ल** पंचमी 03:14.7 तक **षष्ठी प्रारम्भ**
11 **शुक्ल** षष्ठी 05:45.7 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**12** **शुक्ल** सप्तमी 07:55.7तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**13** **शुक्ल** अष्टमी 09:31.9 तक **नवमी प्रारम्भ**	**14** **शुक्ल** नवमी 10:24.1 तक **दशमी प्रारम्भ**	**15** **शुक्ल** दशमी 10:27.1 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**16** **शुक्ल** एकादशी 09:40.0 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**17** **शुक्ल** द्वादशी 08:06.2 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**
18 **शुक्ल** त्रयोदशी 05:51.8 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**19** **शुक्ल** चतुर्दशी 03:05.2 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ** पूर्णिमा 23:55.8 तक **भाद्रपद कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**	**20** **भाद्रपद कृष्ण** प्रथमा 20:33.3 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**21** **कृष्ण** द्वितीया 17:07.3 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**22** **कृष्ण** तृतीया 13:46.7 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**23** **कृष्ण** चतुर्थी 10:39.4 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**24** **कृष्ण** पंचमी 07:52.4 तक **षष्ठी प्रारम्भ**
25 **कृष्ण** षष्ठी 05:31.2 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**26** **कृष्ण** सप्तमी 03:39.7 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**27** **कृष्ण** अष्टमी 02:20.3 तक **नवमी प्रारम्भ**	**28** **कृष्ण** नवमी 01:33.8 तक **दशमी प्रारम्भ**	**29** **कृष्ण** दशमी 01:20.2 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**30** **कृष्ण** एकादशी 01:38.0 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**31** **कृष्ण** द्वादशी 02:25.8 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**

माह के शासकीय अवकाश- 15 स्वतंत्रता दिवस, 19 रक्षाबंधन, 26 जन्माष्टमी (19 व 26 का अवकाश कोषागारों के लिए नहीं)।
माह के ऐच्छिक अवकाश- 09 नागपंचमी/जनजातीय दिवस, 13 दुर्गादास राठौर जयंती, 15 पारसी नववर्ष दिवस।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2081

मकर राशि में उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तीन चरण, श्रवण नक्षत्र पूर्ण तथा धनिष्ठा नक्षत्र के दो चरणों का समावेश होता है।

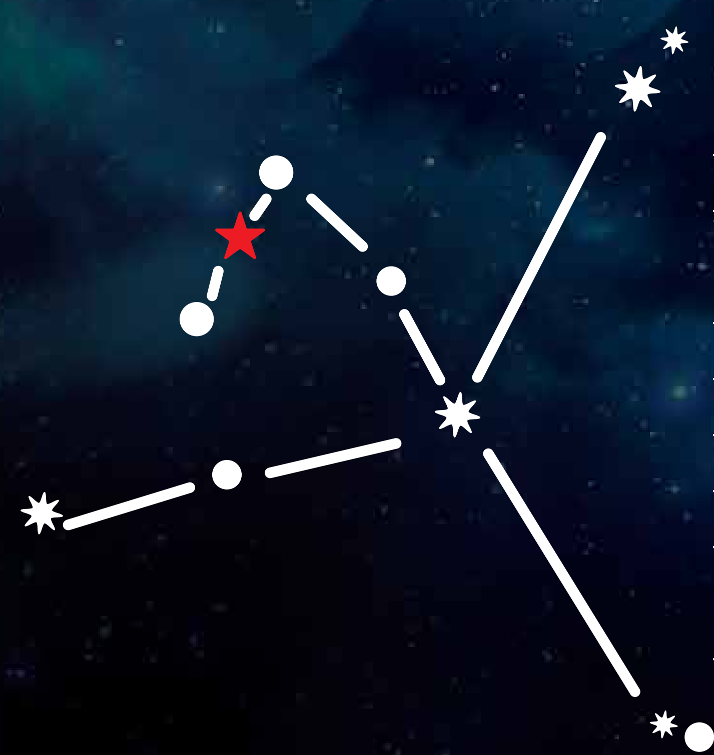

22 | श्रवण

नक्षत्र मंडल में श्रवण नक्षत्र 22वें स्थान पर स्थित और पृथ्वी से दिखने वाला 12वां सबसे चमकीला तारा है। श्रवण का अर्थ है कान। इस नक्षत्र में 3 तारे माने गए हैं जो भगवान विष्णु के तीन पद चिन्ह हैं। श्रवण के तीन प्रकाशमान तारे जो लगभग एक सीध में हैं एक छोटा त्रिकांड जैसी आकृति बनाते हैं। यह नक्षत्र आकाश में चील या गरुड़ के समान प्रतीत होता है। श्रवण नक्षत्र के चारों चरण मकर राशि में स्थित हैं। इसके देवता विष्णु हैं और स्वामी ग्रह चंद्रमा हैं। श्रवण से ही श्रुति व स्मृति बना जो कि पुराण साहित्य का मूल आधार है। इसकी वनस्पति आंकड़ा या मदार का पेड़ है।

23 | धनिष्ठा

धनिष्ठा नक्षत्र 23वें स्थान पर आता है। धनिष्ठा नक्षत्र पांच मंदकांति तारों का एक समूह है। जिनसे एक हीरे या पतंग जैसी आकृति बनती है। इसकी आकृति मण्डल, मुरज या मृदंग के समान भी दिखाई देती है। धनिष्ठा नक्षत्र के देवता अष्ट वसवास हैं। मंगल इस नक्षत्र के स्वामी हैं। धनिष्ठा नक्षत्र धन एवं वैभव की स्थिति को दर्शाता है। धनिष्ठा का प्राचीन नाम श्रविष्ठा रहा है, श्रविष्ठा का अर्थ है जिसके बारे में बहुत कुछ सुनने को मिले या बहुचर्चित एवं सुप्रसिद्ध। इसके दो चरण मकर राशि और आखिरी दो चरण कुंभ राशि में स्थित हैं। धनिष्ठा की वनस्पति शमी का पेड़ है।

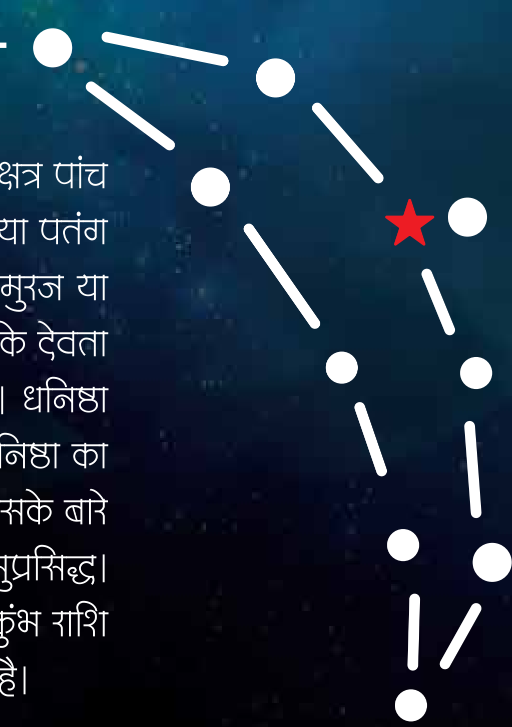

Kaliyugabd - 5126 | कलियुगाब्द - ५१२६

Bhadra-Asvina | September { सितम्बर 2024 } भाद्र-आश्विन

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
1 भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी 03:41.3 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**2** कृष्ण चतुर्दशी 05:22.2 तक अमावस्या प्रारम्भ	**3** कृष्ण अमावस्या 07:25.6 तक भाद्रपद शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	**4** भाद्रपद शुक्ल प्रथमा 09:47.3 तक द्वितीया प्रारम्भ	**5** शुक्ल द्वितीया 12:21.9 तक तृतीया प्रारम्भ	**6** शुक्ल तृतीया 15:01.9 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**7** शुक्ल चतुर्थी 17:37.9 तक पंचमी प्रारम्भ
8 शुक्ल पंचमी 19:59.0 तक षष्ठी प्रारम्भ	**9** शुक्ल षष्ठी 21:53.9 तक सप्तमी प्रारम्भ	**10** शुक्ल सप्तमी 23:12.5 तक अष्टमी प्रारम्भ	**11** शुक्ल अष्टमी 23:47.0 तक नवमी प्रारम्भ	**12** शुक्ल नवमी 23:33.2 तक दशमी प्रारम्भ	**13** शुक्ल दशमी 22:30.5 तक एकादशी प्रारम्भ	**14** शुक्ल एकादशी 20:41.7 तक द्वादशी प्रारम्भ
15 शुक्ल द्वादशी 18:12.5 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**16** शुक्ल त्रयोदशी 15:10.5 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**17** शुक्ल चतुर्दशी 11:44.7 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**18** शुक्ल पूर्णिमा 08:04.5 तक अश्विन कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**19** अश्वि□न कृष्ण प्रथमा 04:19.7 तक द्वितीया प्रारम्भ	**20** कृष्ण द्वितीया 00:40.4 तक तृतीया प्रारम्भ तृतीया 21:15.7 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**21** कृष्ण चतुर्थी 18:14.4 तक पंचमी प्रारम्भ
22 कृष्ण पंचमी 15:44.1 तक षष्ठी प्रारम्भ	**23** कृष्ण षष्ठी 13:51.0 तक सप्तमी प्रारम्भ	**24** कृष्ण सप्तमी 12:39.4 तक अष्टमी प्रारम्भ	**25** कृष्ण अष्टमी 12:11.3 तक नवमी प्रारम्भ	**26** कृष्ण नवमी 12:26.1 तक दशमी प्रारम्भ	**27** कृष्ण दशमी 13:20.8 तक एकादशी प्रारम्भ	**28** कृष्ण एकादशी 14:50.3 तक द्वादशी प्रारम्भ
29 कृष्ण द्वादशी 16:48.1 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**30** अश्विन कृष्ण त्रयोदशी 19:07.1 तक चतुर्दशी प्रारम्भ					

माह की खगोलीय घटनाएँ

5 सितम्बर- चन्द्रमा-शुक्र युति।
सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

17 सितम्बर- चन्द्रमा-शनि युति।
सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

18 सितम्बर- आंशिक चन्द्र ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा।
ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार प्रात: 07:41:08 बजे पर होगा, मध्य की स्थित प्रात: 08:14:02 पर एवं मोक्ष प्रात: 08:46:06 पर होगा।

23 सितम्बर- चन्द्रमा-बृहस्पति युति – रात्रि में चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह पास-पास दिखाई देंगे ।

23 सितम्बर- सूर्य विषुवत रेखा पर लम्बवत होने के कारण दिन व रात बराबर (12-12 घण्टे के) होंगे।

माह के शासकीय अवकाश- 16 मिलाद-उन-नबी (अवकाश कोषागारों के लिए नहीं)।

माह के ऐच्छिक अवकाश- 07 गणेश चतुर्थी, 10 नवाखाई ,13 तेजाजी महाराज का निर्वाण दिवस, तेजा दशमी, 14 डोलग्यारस , 17 विश्वकर्मा जयंती / अनन्त चतुर्दशी ,18 राजा शंकर शाह तथा रघुनाथ शाह का बलिदान दिवस।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2081

कुंभ राशि में धनिष्ठ नक्षत्र के दो चरण, शतभिषा पूर्ण तथा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के तीन चरणों का समावेश होता है।

24 | शतभिषा नक्षत्र

शतभिषा नक्षत्र ठीक क्रांतिवृत पर स्थित है। कुंभ से निकलने वाली जलधारा में इस नक्षत्र के तारे माने गए हैं। इसका रंग लाल है। शतभिषा नक्षत्र का स्वामी राहु है एवं राशि का स्वामी शनि है। 27 नक्षत्रों की श्रृंखला में से इस नक्षत्र का 24वां स्थान है। सौ तारों को मिलाकर इसे शतभिषा अर्थात् सौ तारों वाला नक्षत्र कहा जाता है। वहीं शतभिष्क शब्द 100 का वाचक है इसलिए इसे संख्या के आधार पर नामकरण प्राप्त है। इसे शततारक के नाम से भी पुकारा जाता है। इसके चारों चरण कुम्भ राशि में आते हैं। इसको पांच अशुभ नक्षत्रों में गिना जाता है। इसकी वनस्पति कदंब का पेड़ है एवं इसकी आकृति एक खाली वृत्त की तरह होती है।

पूर्वा भाद्रपद | 25

आकाशमंडल में स्थित 27 नक्षत्रों में से पूर्वा भाद्रपद 25वां नक्षत्र है। प्राचीन साहित्य में भाद्रपदा को प्रोष्ठपदा भी कहा गया है। भाद्रपदा का अर्थ है, सुंदर या शुभ पैर। पूर्वा भाद्रपद का अर्थ होता है, शुभ पद यानी भाग्यशाली पैरों वाला नक्षत्र। प्रोष्ठपदा का अर्थ है चौकी या स्टूल। भाद्रपदा के नक्षत्र सचमुच ही आकाश में एक चतुर्भुज या चार पैरों वाली एक चौकी की आकृति बनाते हैं। इसके स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के देवता हैं अज एकपाद यानी एक पैर वाला अजन्मा। बारह राशियों में से पूर्वभाद्रपद नक्षत्र के पहले तीन चरण कुम्भ राशि में और आखिरी एक चरण मीन राशि में आता है। यह नक्षत्र कुंभ राशि और मीन राशि को जोड़ता है। इसकी वनस्पति आम का पेड़ है और यह दो तलवार, दो सिर वाले पुरूष या बिस्तर के दो पैरों जैसी आकृति का होता है।

Kaliyugabd - 5126 | कलियुगाब्द - ५१२६

Asvina-Kartika | October

अक्टूबर 2024

आश्विन-कार्तिक

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
माह की खगोलीय घटनाएँ **2-3 अक्टूबर– कंकणाकृति सूर्य ग्रहण** - भारत में दृश्य नहीं होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार रात्रि 22:23:6 बजे पर होगा, मध्य की स्थित रात्रि 00:15:00 पर एवं मोक्ष रात्रि 02:06:02 पर होगा।		**1** **अश्विन कृष्ण** चतुर्दशी 21:39.8 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	**2** **कृष्ण** **अमावस्या पूर्ण दिवस**	**3** **अश्विन कृष्ण** अमावस्या 00:19.3 तक **अश्विन शुक्ल** प्रथमा प्रारम्भ	**4** **शुक्ल** प्रथमा 02:58.6 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**5** **शुक्ल** द्वितीया 05:31.2 तक **तृतीया प्रारम्भ**
6 **शुक्ल** तृतीया 07:50.0 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**7** **शुक्ल** चतुर्थी 09:48.1 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**8** **शुक्ल** पंचमी 11:18.5 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**9** **शुक्ल** षष्ठी 12:14.9 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**10** **शुक्ल** सप्तमी 12:32.2 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**11** **शुक्ल** अष्टमी 12:07.2 तक **नवमी प्रारम्भ**	**12** **शुक्ल** नवमी 10:58.9 तक **दशमी प्रारम्भ**
13 **शुक्ल** दशमी 09:09.2 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**14** **शुक्ल** एकादशी 06:41.8 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**15** **शुक्ल** द्वादशी 03:42.8 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**16** **शुक्ल** त्रयोदशी 00:19.6 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ** चतुर्दशी 20:41.0 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ**	**17** **शुक्ल** पूर्णिमा 16:56.4 तक **कार्तिक कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**	**18** **कार्तिक कृष्ण** प्रथमा 13:15.8 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**19** **कृष्ण** द्वितीया 09:49.2 तक **तृतीया प्रारम्भ**
20 **कृष्ण** तृतीया 06:46.7 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**21** **कृष्ण** चतुर्थी 04:17.6 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**22** **कृष्ण** पंचमी 02:30.0 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**23** **कृष्ण** षष्ठी 01:29.5 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**24** **कृष्ण** सप्तमी 01:19.4 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**25** **कृष्ण** अष्टमी 01:58.9 तक **नवमी प्रारम्भ**	**26** **कृष्ण** नवमी 03:23.3 तक **दशमी प्रारम्भ**
27 **कृष्ण** दशमी 05:24.3 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**28** **कृष्ण** एकादशी 07:51.2 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**29** **कृष्ण** द्वादशी 10:32.2 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**30** **कृष्ण** त्रयोदशी 13:16.0 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**31** **कार्तिक कृष्ण** चतुर्दशी 15:53.3 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	**5 अक्टूबर- चन्द्रमा-शुक्र युति।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। **14 अक्टूबर- चन्द्रमा-शनि युति-** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह पास-पास दिखाई देंगे। **21 अक्टूबर- चन्द्रमा-बृहस्पति युति-** रात्रि में चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह पास-पास दिखाई देंगे।	

माह के शासकीय अवकाश- 2 गांधी जयंती, 12 दशहरा (विजयादशमी), 17 महर्षि वाल्मीकी जयंती (कोषागारों के लिए अवकाश नहीं), 31 दीपावली।

माह के ऐच्छिक अवकाश- 01 प्राणनाथ जयंती, 02 सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या, 03 अग्रसेन जयंती, 11 दशहरा (महाअष्टमी) / दशहरा (महानवमी), 17 महाराज अजमोढ़ देव जयंती/ टेकचंद जी महाराज का समाधि उत्सव, 23 डॉ. सैयदना साहब का जन्मदिवस, 30 दीपावली (दक्षिण भारतीय)

मीन राशि में पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का एक चरण, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र पूर्ण तथा रेवती नक्षत्र पूर्ण का समावेश होता है।

26 | उत्तरा भाद्रपद

उत्तरा भाद्रपद ब्रह्माण्ड में मौजूद 27 नक्षत्रों में से 26वां नक्षत्र है। चतुर्भुज के पूर्व की ओर के बाद में उदित होने वाले दो तारे उत्तराभाद्रपद नक्षत्र है। उत्तरा भाद्रपद का अर्थ है शुभ पांव वाला। ये पीछे के पांव हैं, जो शुभ माने जाते हैं। यह हमसे करीब 116 प्रकाश वर्ष दूर है। इस नक्षत्र का स्वामी शनि और राशि का स्वामी बृहस्पति है इसलिए इस नक्षत्र पर शनिदेव और बृहस्पति देव दोनों का प्रभाव पड़ता है। इस नक्षत्र का देवता अतिर्बुधन्य को माना जाता है जो भगवान विष्णु को शैय्या प्रदान करते हैं। इस नक्षत्र के चारों चरण मीन राशि में उपस्थित हैं। इसकी वनस्पति नीम के पेड़ को माना गया है और आकार में यह आयताकार बिस्तर की तरह दिखाई देता है।

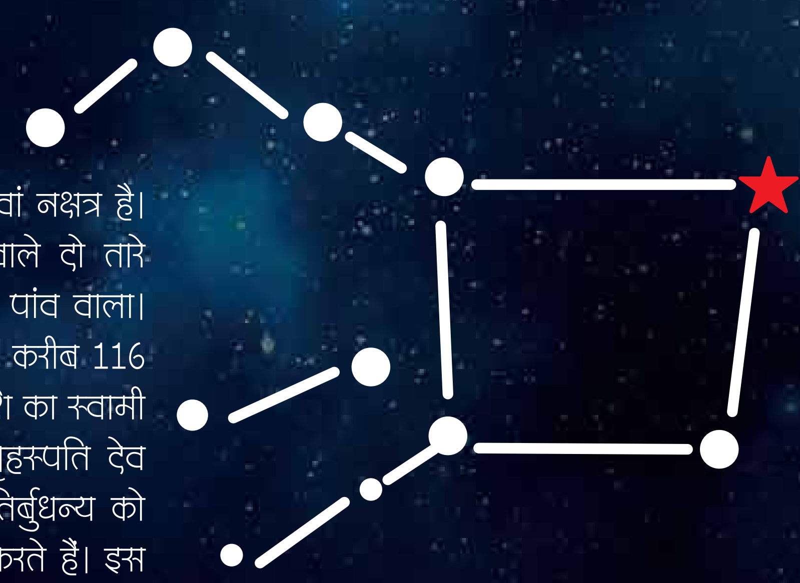

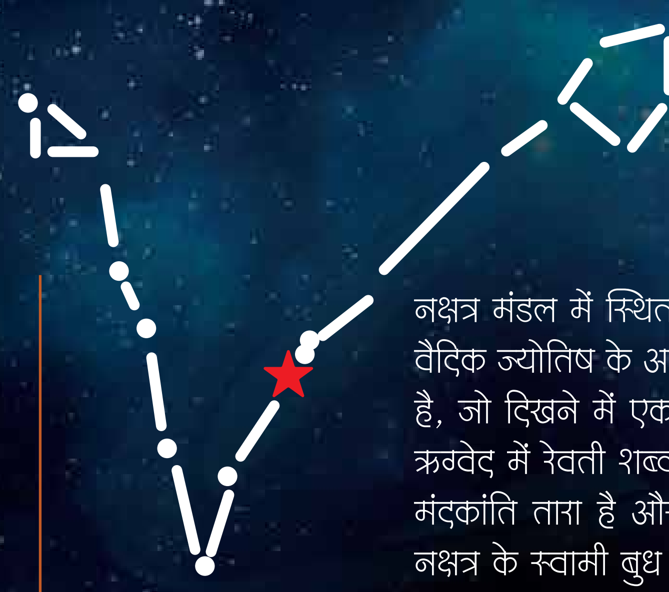

27 | रेवती

नक्षत्र मंडल में स्थित 27 नक्षत्रों में रेवती नक्षत्र आखिरी नक्षत्र है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार, यह 32 तारों के समूह से मिलकर बना है, जो दिखने में एक मछली या मृदंग की आकृति जैसी होती है। ऋग्वेद में रेवती शब्द धनवती या धनदात्री के अर्थ में है। यह एक मंदकांति तारा है और इसे मुश्किल से ही पहचाना जाता है। इस नक्षत्र के स्वामी बुध व राशि स्वामी देवताओं के गुरु बृहस्पति हैं, वहीं रेवती के देवता पूषा हैं। रेवती का अर्थ है धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति। विद्वानों के अनुसार इसे शुभ परिवर्तन लाने वाला नक्षत्र भी कहा जाता है। रेवती नक्षत्र के चारों चरण मीन राशि में स्थित हैं। महुआ का पेड़ इस राशि की वनस्पति मानी जाती है।

Kaliyugabd - 5126 | **कलियुगाब्द - ५१२६**

Kartik-Agrahayan | Novemer { नवम्बर 2024 } कार्तिक-अग्रहायण

माह की खगोलीय घटनाएँ

- **3 नवम्बर- चन्द्रमा- बुध युति।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बुध ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।
- **4 नवम्बर- चन्द्रमा- शुक्र युति।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।
- **17 नवम्बर- चन्द्रमा-बृहस्पति युति।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह पास-पास दिखाई देंगे।
- **20 नवम्बर- चन्द्रमा- मंगल युति।** रात्रि में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

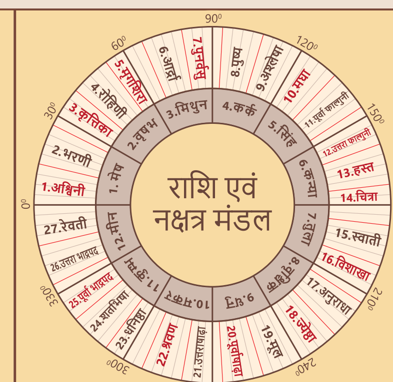

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
					1 कार्तिक कृष्ण अमावस्या 18:17.1 तक कार्तिक शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	**2** कार्तिक शुक्ल प्रथमा 20:22.4 तक द्वितीया प्रारम्भ
3 शुक्ल द्वितीया 22:05.7 तक तृतीया प्रारम्भ	**4** शुक्ल तृतीया 23:24.7 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**5** शुक्ल चतुर्थी पूर्ण दिवस	**6** शुक्ल चतुर्थी 00:17.3 तक पंचमी प्रारम्भ	**7** शुक्ल पंचमी 00:41.5 तक षष्ठी प्रारम्भ	**8** शुक्ल षष्ठी 00:35.3 तक सप्तमी प्रारम्भ सप्तमी 23:56.9 तक अष्ठमी प्रारम्भ	**9** शुक्ल अष्ठमी 22:45.6 तक नवमी प्रारम्भ
10 शुक्ल नवमी 21:01.7 तक दशमी प्रारम्भ	**11** शुक्ल दशमी 18:47.0 तक एकादशी प्रारम्भ	**12** शुक्ल एकादशी 16:05.2 तक द्वादशी प्रारम्भ	**13** शुक्ल द्वादशी 13:01.8 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**14** शुक्ल त्रयोदशी 09:43.8 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**15** शुक्ल चतुर्दशी 06:19.5 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**16** कार्तिक कृष्ण शुक्ल पूर्णिमा 02:58.5 तक अग्रहायण कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ प्रथमा 23:50.9 तक द्वितीया प्रारम्भ
17 कृष्ण द्वितीया 21:06.9 तक तृतीया प्रारम्भ	**18** कृष्ण तृतीया 18:56.6 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**19** कृष्ण चतुर्थी 17:28.8 तक पंचमी प्रारम्भ	**20** कृष्ण पंचमी 16:50.1 तक षष्ठी प्रारम्भ	**21** कृष्ण षष्ठी 17:03.7 तक सप्तमी प्रारम्भ	**22** कृष्ण सप्तमी 18:08.3 तक अष्टमी प्रारम्भ	**23** कृष्ण अष्टमी 19:57.5 तक नवमी प्रारम्भ
24 कृष्ण नवमी 22:20.3 तक दशमी प्रारम्भ	**25** कृष्ण दशमी पूर्ण दिवस	**26** कृष्ण दशमी 01:02.2 तक एकादशी प्रारम्भ	**27** कृष्ण एकादशी 03:48.0 तक द्वादशी प्रारम्भ	**28** कृष्ण द्वादशी 06:24.2 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**29** कृष्ण त्रयोदशी 08:40.4 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**30** अग्रहायण कृष्ण चतुर्दशी 10:30.3 तक अमावस्या प्रारम्भ

माह के शासकीय अवकाश- 15 गुरूनानक जयंती/ राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस (भगवान बिरसा मुण्डा जयंती)

माह के ऐच्छिक अवकाश- 01 दीपावली का दूसरा दिन, 07 छठ पूजा, 08 भगवान सहस्त्रबाहु जयंती, 12 नामदेव जयंती, 22 झलकारी जयंती

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान
भोपाल

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन कैलेण्डर
वर्ष 2024 | विक्रम संवत् 2081

मेष राशि में अश्विनी नक्षत्र पूर्ण, भरणी नक्षत्र पूर्ण तथा कृतिका के एक चरण का समावेश होता है।

1 | अश्विनी नक्षत्र

सबसे प्रथम नक्षत्र अश्विनी नक्षत्र के नाम से जाना जाता है। आकाश में 3 तारों के समूह में एक घोड़े के मुख के समान दिखने वाले इस नक्षत्र के चारों चरण मेष राशि में स्थित हैं। तैत्तिरीय संहिता में इस नक्षत्र का नाम अश्वयुज है। मेष मंडल के अक्षरांकित तारे वैदिक काल में अश्वयुज या अश्विन के नाम से जाने जाते थे। केतु गृह द्वारा शासित होने के कारण यह नक्षत्र भी एक गंडमूल नक्षत्र है। अश्विनी नक्षत्र की वनस्पति कुचला है और मेष राशि में स्थित होने के कारण इस पर मेष राशि के स्वामी मंगल का भी प्रभाव रहता है। वैदिक शास्त्र के अनुसार अश्विनी एक अप्सरा थीं जो बाद में सूर्य देव की पत्नी बनीं।

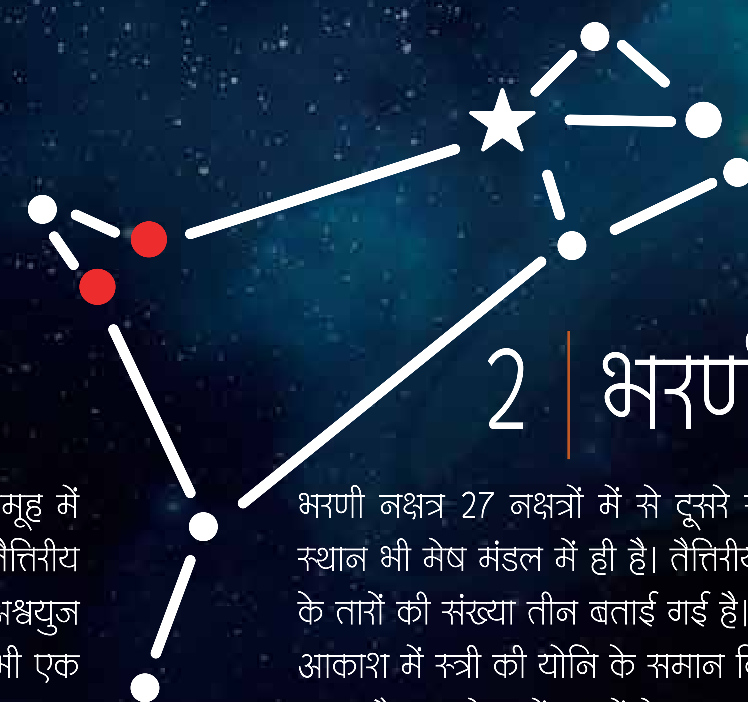

2 | भरणी नक्षत्र

भरणी नक्षत्र 27 नक्षत्रों में से दूसरे स्थान पर आता है। अश्विन के पूर्वोत्तर में भरणी नक्षत्र का स्थान भी मेष मंडल में ही है। तैत्तिरीय संहिता में इसे अपभरणी कहा गया है। अथर्ववेद में भरणी के तारों की संख्या तीन बताई गई है। वस्तुतः भरणी के समूह में तीन ही स्पष्ट तारे हैं। यह समूह आकाश में स्त्री की योनि के समान दिखता है इसलिए इसे कई बार त्रिकोण आकार में भी दर्शाया जाता है। अपने चारों चरणों के साथ मेष राशि में स्थित यह नक्षत्र भगवान यम द्वारा शासित है और इसके ग्रह स्वामी गुरु हैं। भरणी नक्षत्र की वनस्पति आँवला है और भरणी शब्द का अर्थ धारक होता है। भरणी नक्षत्र के राशि स्वामी मंगल हैं।

Kaliyugabd - 5126 | कलियुगाब्द - ५१२६

Agrahayan-Pausha | December { दिसम्बर 2024 } अग्रहायण- पौष

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरुवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
1 अग्रहायण कृष्ण अमावस्या 11:51.4 तक अग्रहायण शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	2 अग्रहायण शुक्ल प्रथमा 12:43.8 तक द्वितीया प्रारम्भ	3 शुक्ल द्वितीया 13:09.5 तक तृतीया प्रारम्भ	4 शुक्ल तृतीया 13:10.8 तक चतुर्थी प्रारम्भ	5 शुक्ल चतुर्थी 12:49.9 तक पंचमी प्रारम्भ	6 शुक्ल पंचमी 12:08.3 तक षष्ठी प्रारम्भ	7 शुक्ल षष्ठी 11:06.6 तक सप्तमी प्रारम्भ
8 शुक्ल सप्तमी 09:44.9 तक अष्टमी प्रारम्भ	9 शुक्ल अष्टमी 08:03.3 तक नवमी प्रारम्भ	10 शुक्ल नवमी 06:02.2 तक दशमी प्रारम्भ	11 शुक्ल दशमी 03:43.4 तक एकादशी प्रारम्भ	12 शुक्ल एकादशी 01:09.9 तक द्वादशी प्रारम्भ द्वादशी 22:26.7 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	13 शुक्ल त्रयोदशी 19:40.5 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	14 शुक्ल चतुर्दशी 16:59.1 तक पूर्णिमा प्रारम्भ
15 अग्रहायण शुक्ल पूर्णिमा 14:31.7 तक प्रथमा प्रारम्भ	16 पौष कृष्ण प्रथमा 12:27.8 तक द्वितीया प्रारम्भ	17 कृष्ण द्वितीया 10:56.6 तक तृतीया प्रारम्भ	18 कृष्ण तृतीया 10:06.6 तक चतुर्थी प्रारम्भ	19 कृष्ण चतुर्थी 10:03.4 तक पंचमी प्रारम्भ	20 कृष्ण पंचमी 10:49.3 तक षष्ठी प्रारम्भ	21 कृष्ण षष्ठी 12:21.8 तक सप्तमी प्रारम्भ
22 कृष्ण सप्तमी 14:32.4 तक अष्ठमी प्रारम्भ	23 कृष्ण अष्टमी 17:08.2 तक नवमी प्रारम्भ	24 कृष्ण नवमी 19:52.8 तक दशमी प्रारम्भ	25 कृष्ण दशमी 22:29.6 तक एकादशी प्रारम्भ	26 कृष्ण एकादशी पूर्ण दिवस	27 कृष्ण एकादशी 00:44.3 तक द्वादशी प्रारम्भ	28 कृष्ण द्वादशी 02:27.0 तक त्रयोदशी प्रारम्भ
29 कृष्ण त्रयोदशी 03:33.1 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	30 कृष्ण चतुर्दशी 04:02.0 तक अमावस्या प्रारम्भ	31 पौष शुक्ल अमावस्या 03:56.8 तक प्रथमा प्रारम्भ				

माह की खगोलीय घटनाएँ

4 दिसम्बर- चन्द्रमा-शुक्र युति- सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे

14 दिसम्बर- चन्द्रमा-बृहस्पति युति- सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह पास-पास दिखाई देंगे।

18 दिसम्बर- चन्द्रमा-मंगल युति- रात्रि में चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

22 दिसम्बर- सूर्य मकर रेखा पर लम्बवत होने के कारण उत्तरी गोलार्द्ध में दिन सबसे छोटा तथा रात सबसे बड़ी होगी। इस दिन स्थानीय समय 12 बजे मकर रेखा के नजदीक स्थित देशों के समस्त स्थानों पर परछाई कुछ समय के लिए शून्य हो जाएगी।

माह के शासकीय अवकाश- 25 ख्रीस्त जयंती (क्रिसमस)

माह के ऐच्छिक अवकाश- 03 विश्व विकलांग दिवस, 04 क्रांतिसूर्य टंट्या भील बलिदान दिवस, 14 दत्तात्रय जंयती , 18 गुरु घासीदास जयंती, 27 महाराजा खेतसिंह खंगार जी की जयंती, 31 बालीनाथ जी बैरवा जयंती।